रवीन्द्र कुमार

रवीन्द्र कुमार के जनम नालंदा जिला के बिहार शरीफ में 6 जनवरी 1936 के भेल हल। रवीन्द्र कुमार पर मगही भासा के नाज हे। इनकर कहानी में मगही भासा के सब्द-सौंदर्य, निखर उठऽ हे। ग्रामीण जिनगी के लालित्य अप्पन पूरा संवेदना के साथ उनकर कहानी में मौजूद हे। कई दर्जन कहानी के रचनाकार रवीन्द्र कुमार के कहानी रचना आउ सिल्प के स्तर पर कउनो भासा के कहानी के समानान्तर खड़ा हो सकऽ हे। इनकर परकासित कहानी संकलन के नाम हे 'अजब रंग बोले'।

'पित्तर के फुचकारी' में बाल सुलभ प्रवृत्ति के जबरदस्त झलक मिलऽ हे। पिता के पुत्र के प्रति मोह-ममता उमड़ पड़ऽ हे। लइकन के फुसलावे ला दादी कहानी सुनावऽ हे। आर्थिक तंगी यानि कि पइसा के कमी से पिता के क्रोध पैदा होवऽ हे, जेकरा कारन ऊ पुत्र के पीट देहे। ओकरा पित्तर के फुचकारी खरीदे के छमता न हे। बाद में ऊ पुत्र के देख के रो पड़ऽ हे। ओकरा प्यार करे लगऽ हे। ई देख के नायक के माय के ममता भी उमड़ पड़ऽ हे।

पित्तर के फुचकारी

'नयँ, हम लेम तो ओइसने लेम !'

'ओइसन लेके तूँ की करबहीं रे; आँय ? तोरा ओकरो से नीमन ला देबउ। ओइसन पोवार नीअर पीअर फुचकारी की लेमँऽ ? तोरा हम चानी नीअर चम-चम ला देबउ। हहरऽ हें काहेला ?'

'नयँ, हम लेम तो छोटुए अइसन लेम !'

'अच्छे, चुप रह ! ला देबउ।'

ऊ बुतरुआ फिनूँ लाहरी करे लगल। रामधनी के मिजाज गरम हो गेल — 'अरे ससुर, कहलिअउ तो, ला देबउ। एते जिद्दी काहे हो जाहें।'

बुतरू के जात, झिड़की सुनके चुप हो गेल। रामधनी कंधा पर अंगोछा रखलक आउ फाँड़ा में दूगो रुपइया लेके चलल बजार। बजार पहुँचला पर एक ठमा देखलक कि ढेर सा पित्तर के फुचकारी लटक रहल हे–ठीक बुद्धन के बेटवा छोटुए जइसन। रामधनी मन में सोचलक—'होलिओ रोज-रोज आवऽ हे ! छौंड़ा के मन आज रख लेल जाय। बस ऊ दोकान पर बढ़ के दोकनदार से ओकर दाम-साम करे लगल—'एकर केतना दाम हो ?'

'सवा तीन रुपइया।'

'बाप रे, एतनिएँ गोके सवा तीन रुपइया लेबहूँ ?'

'अरे खरीदे के मन नयँ रहो तो दाम मत पूछल करऽ।'

दोकनदार के घुड़की सुनके रामधनी सकदम में पड़ गेल। कइसहुँ फिनूँ बोलल—'अच्छे भाई, ने हम्मर बात ने तोहर। पउने दू रुपइया में दे देहूँ।'

'एजा मोल-जोल नयँ कइल जाहे। कोई दोसर दोकान देखऽ !'

'भाई जी, एकरा में दोसर दोकान के कउन बात हे ! दू रुपइया तलक हम्में दे दे सकऽ हिओ।'

'कहबे करऽ हऽ, तो तीन रुपइया से कम नयँ लगतो। लेवे के हो तो लऽ; नयँ तो... ?'

'तीने रुपइया काहे; हम तो तोरा सवा-तीनो गो दे देतिओ हल, बाकि अखनी हमरा हीं बेसी नयँ हे। नयँ तो एत्ते घिघिअइतियो नयँ हल। एहू दू रुपइया हम बुतरू के मन रक्खे ला दे रहलिओ हे।'

'एतना में नयँ होतो।'

लचार होके रामधनी आगे बढ़ल। सोंचे लगल, टीने के काहे ने ले लेउँ ? चार-पाँचे आना में काम चल जायत ! अरे बुतरू जात के हिरिस हइ आउ का ! अप्पन रहते ऊ तुरते भुला जायत। पित्तर के फुचकारी ओकर खियालो से उतर जायत। फिन परबो लागी तो सर-सरजाम लेवे के हे। दुइए रुपइया में सभे करे के हे।

सब गम-बुझ के रामधनी सौदा कैलक आउ घरे लउट गेल। बजार से अइते देख के धनुआँ हुलसते बाप भिर गेल। रामधनी अप्पन हाथ के फुचकारी ओकर हाथ में थम्हाँ देलक। धनुआँ जे टीन के फुचकारी देखलक, से जर के खाक हो

गेल। फुचकारी के कस के अँगना में फेंक देलक। संजोग के बात, फुचकरिया फेंका के अँगनमा के इनरवा में चल गेल। अब रामधनी के गोस्सा के कोय ठेकाना नयँ रहल। दे थप्पड़, दे थप्पड़, धनुआँ के अन्हुआ देलक। धनुआँ भोंकार पार के काने लगल। ओन्ने धनुआँ के मामाँ ओकरा जे कानते सुनलक से हाँहे-फाँहे धउगल आयल। रामधनी से छीन के धनुआँ के करेजा से साट लेलक आउ गुदाल कर-कर के लगल रामधनी के गरियावे—'हाय रे हाय ! बचवा के मारिए देलक। अरे टूअर-टापर बचवा पर हाथ उठयते गल नयँ गेलउ रे !'

धनुआँ के मामाँ अपने बेटवा के गरिया रहल हल। महल्ला-टोला के दू-चार अदमी मजा लेवे ला जमा हो गेल। धनुआँ के मामाँ कस-कस के गरिअइले हल। ऊ तखनी तक गरिअइते रहल जखनी तक ओकर मुँह नयँ पिरा गेल। रामधनी खिसिआयल–ठिसुआयल ओज्जा पर से टर गेलक।

होली के धूम मचल हल। रंग-अबीर से सबके हाल देखहीं लायक हल। ढोल-मँजीरा पर फाग के धूरी उड़ रहल हल। सगरो मस्तीए-मस्ती छायल हल।

गोस्सा के मारे धनुआँ के मामाँ परब में कुच्छो नयँ पकौलक। पोतवा लागी खाली चार पइसा के बुनिया आउ दू पइसा के तेलही जिलेबी ले आयल। धनुआँ मुँह फुलयले हल, से बड़ी खोसामद करे से तनि-मनि खयलक-पीलक।

रस्से-रस्से साँझ हो गेल, फिन रात। दादी-पोता ओसरे में खटिया पर पड़ गेल, मामाँ खिस्सा सुनावे लगल—

'एगो रानी हल। रानी के एगो बेटी हल .....'

धनुआँ धिआन लगा के खिस्सा सुने लगल।

'...एतने कहानी

बोद्दा रानी

बोद-बुदक्कड़

चुल्हा ऊपर लक्कड़

चुल्हा पर चकठी

धनुआँ के सास नकटी...'

धनुआँ अप्पन सास के नकटी सुनके लजा गेल। ऊ मामाँ के अप्पन छोट-छोट हाथ से मारे लगल। मामाँ हँसते-हँसते बोलल—'अच्छा भाय, धनुआँ के सास नयँ, रानी के सास नकटी।'

तब कहीं धनुआँ अप्पन हाथ रोकलक—'फिन रानी की कहलकइ मामाँ ?'

'रात केत्ते भींग गेलउ बेटा, अब सरदार निअर चुप्पे-चाप सुत रह। खिस्सा खतम, पइसा हजम।'

'नयँ-नयँ, जो !'

'तूँ तो भुका के रख देहे' रे ! अच्छा सुन.....' खिस्सा चलते रहल। दादी-पोता खिस्सा कहते-सुनते कखनी सुत गेलन, एकर खबर केकरो न होयल।

ओन्ने रामधनी पुरवारी ओसरा में खटिया पर पटायल हल। आज की जाने काहे ओकरा धनुआँ के माय के इयाद आ रहल हल। धनुआँ के माय साँप के काटे से मर गेल हल। मरे बखत ऊ चेतउले गेल हल—'देखिहऽ जी, छौंड़ा पर धिआन रखिहऽ। अइसन ने टूअर-टापर बुतरू निअर हम्मर पीछू में एहू बिलट-बिलट के मर जाय।'

रामधनी के आउ नयँ रहल गेल। गते-गते चोर निअर ऊ अप्पन माय के खटिया भिर गेल। धनुआँ सुतल हल। गाल पर बहल लोर के सुक्खल धार इँजोरिया में भक-भक लउक रहल हल। रामधनी धनुआँ पर झुक गेल। ओकर परेम में दिवाना निअर करे लगल। ऊ कभी धनुआँ के गाल चूमे कभी लिलार। रामधनी के माय अदमी के गंध पइलक, से झट खटिया पर से उठ गेल। रामधनी के पेआर करते देखलक तो सल्ले-बल्ले पाया भिर चल गेल। ओकरो आँख से लोर बह-बह के गिरे लगल।

तुरते खियाल पड़ल—'हाय रे हाय ! हम्मर बेटवा आज परबो में एगो खुदियो मुँह में न डाललक। होली जइसन परब फिन कहिआ आयत !' अधरतिये में गोइंठा जोड़ के ऊ पकावे चलल।

धनुआँ कुलबुला के उठ गेल। बाप के जे एत्ते दुलारते देखलक, से फूट के काने लगल। रामधनिओं से नयँ रहल गेल। बुतरुओ से बत्तर ऊ काने लगल। आँख से बरखा के नदी निअर धार बहे लगल।

ओन्ने असमान में चाँद सब्भे-कुछ देख रहल हल। दुनिया भर के फुचकारी के रंग के चाहे ऊ पित्तर के होय चाहे टीन के, ऊ केकरो से नयँ रंगायल हल। केकरो

हँसी-खुसी के परभाव ओकरा पर नयँ पड़ल हल। बाकि ई देख के ओकरो आँख छलक आयल। ओकर लोर से टाँड़-टिल्हा, घर-दुआर सभे ओद्दा हो गेल।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कहानी के तीन मुख्य तत्व बतावऽ।

   (ख) धनुआ मामा के अप्पन छोट-छोट हाथ से काहे मारे लगल ?

   (ग) 'ओन्ने असमान में चाँद सभे-कुछ देख रहल हल'—ई वाक्य मे कउन भाव के दरसावल गेल हे ?

   (घ) कहानी में कउन पात्र तोर मन मोह लेवऽ हे आउ काहे ?

   (ङ) 'होलियो रोज-रोज आवऽ हे ?' एकरा से कउन भाव निकलऽ हे, समझावऽ।

लिखित :

1. रवीन्द्र कुमार के पाँच पंक्ति में परिचय दऽ ।
2. कहानी सिल्प के मोताबिक 'पित्तर के फुचकारी' कहानी के कसउटी पर कसऽ ।
3. ई कहानी के माध्यम से का सनेस मिलऽ हे ? पाँच वाक्य में बतावऽ ?
4. दोकनदार आउ रामधनी के बतकही पाँच वाक्य में लिखऽ।
5. रामधनी के चरित्र के पाँच गो विसेसता बतावऽ ।
6. रामधनी के आँख से लोर काहे बहे लगल ?
7. धनुआँ फूट के काहे काने लगल ?
8. रामधनी ला होली कइसन रहल ? एकरा से तोरा पर का असर पड़ऽ हे ?
9. 'पित्तर के फुचकारी' एकर सीर्सक काहे रखल गेल हे ?
10. नीचे लिखल वाक्य के व्याख्या करऽ :

    हाय रे हाय ! हम्मर बेटवा आज परबो में एगो खुदियो मुँह में न डाललक। होली जइसन परब फिन कहिआ आयत !

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से पाँच गो मुहावरा चुनके ओकर अर्थ बतावऽ ।
2. पाठ से पाँच गो समासिक सब्द चुनके बतावऽ।
3. पाठ से चार गो सहचर सब्द चुनके बतावऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. कोई अइसने कहानी विद्यालय के पुस्तकालय से चुन लावऽ आउ किलास में सुनावऽ ?
2. ई कहानी में गरीबी आउ ममता के बीच जे संबंध बतावल गेल हे, ऊ तोरा विचार से केतना मेल खाहे ?

सब्दार्थ :

निमन	—	अच्छा
बुतरू	—	लड़का
घिघियाना	—	गिड़गिड़ाना
झकझक	—	साफ-साफ
अखनी	—	अब

●●●